पं० जवाहरलाल नेहरू का व्यक्तित्व सूर्य के समान तेजस्वी, चन्द्रमा के समान सुन्दर, हिमालय के समान स्वाभिमान से पूर्ण तथा सागर के समान गम्भीर था। भारतवर्ष की इस मिट्टी में ही उनका लालन-पालन हुआ। नेहरूजी के महान् व्यक्तित्व में भारतीय संस्कृति के दर्शन होते थे। उन्होंने अनेक राज्यों के महान् पुरुषों के गुणों को अपने व्यक्तित्व में सँजोया। इन प्रान्तों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक गुणों का नेहरू के व्यक्तित्व में समावेश हुआ। कवि के अनुसार नेहरूजी के व्यक्तित्व में विभिन्न प्रान्तों के गुणों का समावेश इस प्रकार हुआ—

गुजरात प्रदेश में उत्पन्न हुए **महात्मा गांधी** से उन्होंने अहिंसा, सत्य, प्रेम तथा मानवता की पूजा का पाठ पढ़ा तथा **नरसी मेहता** की भक्तिमयी वाणी से हृदय की पवित्रता को समझा। गुजरात के ही वीर रस के कवि **पद्मनाभ** तथा **महर्षि दयानन्द** की चारित्रिक विशेषताओं का भी नेहरूजी पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

महाराष्ट्र भी नेहरूजी को शिवाजी की तलवार देकर उनका अभिनन्दन करता है। यह तलवार मातृभूमि की रक्षा की प्रतीक है। महाराष्ट्र का विश्वास है कि तलवार ही संकट के समय में देश की रक्षा कर सकती है। महाराष्ट्र नेहरूजी को **गुरु रामदास** की राष्ट्रीय चेतना, गीता के ज्ञान पर आधारित **ज्ञानेश्वर** का कर्मवाद तथा **तुकाराम** और **लोकनाथ** के गीतों का संकलन अर्पित करता है। इसी प्रकार महाराष्ट्र में उत्पन्न **लोकमान्य तिलक** का 'करो या मरो' का नारा नेहरूजी के हृदय में देश के प्रति लगन पैदा करता है। **केशव गुप्त** के ओजस्वी गीत उनके हृदय में नव-चेतना को ज़ाग्रत करते हैं।

नेहरूजी ने **राजस्थान** के महान् पुरुषों से विपदाओं में विचलित न होने की प्रेरणा ली। उन्होंने राजस्थान से ही संघर्षों में जीना सीखा। इस धरती में **राणा साँगा, चन्दबरदाई, जयमल** आदि वीर पुरुष उत्पन्न हुए, जिनके शौर्य की छाप नेहरूजी के व्यक्तित्व पर पड़ी। राजस्थान वीर पुरुषों के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है, अपितु यहाँ का स्त्री-वर्ग भी वीरता की भावना से ओत-प्रोत है। यहाँ की **पन्ना धाय** ने राज्यहित में अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने एकमात्र पुत्र का भी बलिदान कर दिया। इसी प्रकार पतिव्रता नारी के महान् भारतीय आदर्श तथा अपनी आन-बान की रक्षा के लिए हजारों राजपूत क्षत्राणियों ने जौहर कर लिया। इसके अतिरिक्त श्रीकृष्ण-दीवानी **मीरा** ने जनमानस में भक्ति की भावना को फैलाया। राजस्थान की इस वीर-भावना को देखकर सतपुड़ा राज्य भी मौन नहीं रहता है; वह भारत की अखण्डता की घोषणा करते हुए कहता है—

बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं।
कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं॥

महावीर और **गौतम** के जीवन और उपदेशों से ही उन्होंने मानव-धर्म को सीखा। **कम्बन** की 'रामायण' से 'हिन्दू धर्म' का ज्ञान प्राप्त किया तथा **रामानुजाचार्य** और **शंकराचार्य** के दार्शनिक तत्त्वों से आत्मज्ञान प्राप्त किया। **सतपुड़ा-सन्त 'अप्पा'** के अहिंसावादी विचारों ने सतपुड़ा के साहित्य, कला और संगीत पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है। **कालिदास** की भावुकता, **कुमारिल** की अद्‌भुत प्रतिभा, **मोढ़ा** की व्याकुलता, अंगारों की भाषावाला **फकीर मोहन** तथा अकबर से लड़नेवाली **चाँदबीबी** जैसी अनेक विभूतियों को भी सतपुड़ा ही अपने हृदय में सँजोए हुए है। हृदयगत इन विभूतियों की समग्र विशेषताओं को वह नेहरूजी को अर्पित कर देना चाहता है। सतपुड़ा की प्रतिमाओं में भारतीय संस्कृति जीवित है। **तंजौर** और **भुवनेश्वर** की प्रतिमाएँ नेहरूजी को आकर्षित किए बिना नहीं रहतीं। यहीं पर **तानसेन** की वीणा के स्वर भी सुनाई देते हैं।

बंगाल प्रान्त भी अपने आप को नेहरूजी पर न्योछावर कर देना चाहता है। वह कहता है—

बंगाल लगा हल्ला करने, कंगाल नहीं मैं रत्नों का।
तेरे हित अभी सँजोए हूँ, अरमान न जाने कितनों का।।

बंगाल का वैभवशाली अतीत **चण्डीदास** तथा **गोविन्ददास** के मधुर गीतों को हृदय में सँजोए हुए है। राधा की ममता **जयदेव** के गीतों में मिलती है। उनके छन्दों के झुरमुट में गोपियों की व्याकुलता के दर्शन होते हैं। **कृतिवास** के द्वारा अनूदित 'रामायण' और 'महाभारत' तथा **चैतन्य महाप्रभु** की भक्तिमयी वाणी आदि नेहरूजी के चारित्रिक विकास में सहायक बने। **दौलत काजी** तथा **शाह जफर** ने भी बंगाल में ही गजलों की रचना की। नेहरूजी को **विवेकानन्द** तथा **दीनबन्धु** की कर्मठता ने बहुत अधिक प्रभावित किया। नेहरूजी को बंगाल प्रान्त **बंकिमचन्द्र** का राष्ट्रप्रेम, **टैगोर** तथा **शरत** की अमर कला और **सुभाष** की देशभक्ति आदि सबकुछ अर्पित कर देना चाहता है। वह कहता है—

अब जो-कुछ है, सब अर्पित है, आँसू, अंगारे औ' पानी।
जीवन की लाज बचा लेना, गंगा-यमुना के वरदानी॥

आसाम अपनी प्राकृतिक सुषमा को उत्साहपूर्वक नेहरूजी पर न्योछावर कर देना चाहता है। आसाम के **माधव कन्दली** ने 'रामायण' का अनुवाद किया है तथा **मनसा** नामक भक्तकवि के गीतों ने मन को शुद्धता प्रदान की है। **गुरु शंकर** ने साहित्य, कला तथा संस्कृतियों का निर्माण किया है। वैष्णव मठ की दीवारों पर निर्मित '**चरितपुथी**' ने जन-जन को मानवता के मन्त्र का पाठ पढ़ाया। आसाम की घाटियों में संगीत गूँज रहा है तथा हरियाली नेहरूजी के स्वागत के लिए पलकें बिछाए बैठी है। आसाम हृदय से नेहरूजी का स्वागत करना चाहता है। वह कहता है—

मेरी हर धड़कन प्यासी है, तेरे चरणों के चुम्बन को।
होती तैयार खड़ी है रे, जन-मन के स्नेह समर्पण को॥

बिहार गौतम की भूमि है। इस प्रान्त में करुणा के स्वर व्याप्त हैं। यह सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा आदि का नन्दन वन है। तीर्थंकर महावीर की विभूति **वैशाली**; नेहरूजी को मानवीय गुणों के मोती अर्पित करती हुई कहती है—

फिर भी दर्शन के कुछ मोती, इस आशा से ले आई हूँ।
मोती की लाज न जाएगी, 'मोती' के द्वारे आई हूँ॥